P.G.
SEM-II
Paper-9

डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

Date

प्रश्न: 'राग दरबारी' उपन्यास की कथावस्तु पर प्रकाश डालें?

उत्तर: समकालीन कथा साहित्य में निस्संग और उद्देश्यपूर्ण व्यंग्य के लिए श्री लाल शुक्ल विख्यात हैं। 'राग दरबारी' विख्यात हिन्दी साहित्यकार श्री लाल शुक्ल की प्रसिद्ध व्यंग्य रचना है जिसके लिए उन्हें सन 1969 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह ऐसा उपन्यास है जो गाँव की कथा के माध्यम से आधुनिक भारतीय जीवन की मूल्यहीनता को सहजता और निर्ममता से अनावृत करता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के ग्रामीण जीवन की मूल्यहीनता को परत-दर-परत उधेड़नेवाले उपन्यास रागदरबारी पर एक दूरदर्शन धारावाहिक का भी निर्माण हुआ है।

इस उपन्यास की कथावस्तु शिवपालगंज गाँव तक ही सीमित है लेकिन इसकी अंतर्वस्तु देशव्यापी है। उपन्यास के केन्द्रीय चरित्र वैद्य जी हैं। वे बड़ी पहलवान और रुप्पन के पिता और रंगनाथ के मामा हैं। पेशे से वैद्य होने के साथ ही वे छंगामल इंटर कॉलेज में मैनेजर, कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और अपने दरबारी सनीचर की आड़ में ग्रामसभा के प्रधान भी हैं। इस प्रकार वे राजनीतिक संस्कृति के साक्षात प्रतीक हैं जो प्रजातंत्र और लोकहित के नाम पर हमारे चारो ओर विकसित हो रही है। वस्तुतः इस उपन्यास में प्रतीकात्मक रूप से स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में व्याप्त अराजकता, भाई-भतीजावाद, अवसरवादिता, लूट-खसोट, भ्रष्टाचार, चुनावी छल, प्रशासनिक एवं न्यायिक अव्यवस्था को कुशलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

'राग दरबारी' कोई राजनीतिक उपन्यास नहीं है। इसमें किसी भी महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना को कहीं भी, किसी भी रूप में प्रत्यक्ष रूप से कथा का

Date

आधार नहीं बनाया गया है। लेकिन उपन्यास में व्यक्ति घटनाओं, पात्रों के मनोभावों, उनकी चारित्रिक विशेषताओं की पुष्टि के लिए कतिपय राजनीतिक तथ्यों का संकेत इस प्रकार हुआ है कि तत्कालीन राजनीति पर उपन्यासकार का कथ्य उजागर हो जाता है। पंचायत-चुनाव में वैद्य जी की नाईंसाफी और कोऑपरेटिव सोसाइटी के मैनेजिंग डायरेक्टर तथा बंगामल इंटर कॉलेज के मैनेजर का पद अपने बड़े लड़के बद्री पहलवान को वैद्य जी द्वारा सौंपना वैद्य जी की राजनीतिक कूटनीति का सूचक है।

राग दरबारी उपन्यास में शिक्षण संस्थान के रूप में बंगामल विद्यालय इंटर कॉलेज को कथा का प्रमुख केन्द्र बनाया गया है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में ग्रामीण क्षेत्रों की शिक्षण संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार का नमूना यह कॉलेज है। इस कॉलेज के मैनेजर वैद्य जी. कॉलेज के विकास और शिक्षा व्यवस्था में सुधार की अपेक्षा कॉलेज प्रिंसिपल और कॉलेज के शिक्षकों से अपनी खुशामद करवाना पसंद करते हैं। अपने प्रतिकूल होनेवाले शिक्षकों को कॉलेज से निकालने में कभी विलम्ब नहीं करते हैं। मास्टर मोतीराम केमेस्ट्री के शिक्षक हैं जो आपेक्षिक घनत्व पढ़ाते हुए अपनी आय-चक्की का विज्ञापन करते हैं। गणित के मास्टर मालवीय जी कॉलेज के कुछ विद्यार्थियों से शारीरिक संबंध स्थापित किए हुए हैं। खन्ना मास्टर इतिहास के शिक्षक हैं। लेकिन अंग्रेजी साहित्य के अध्यापन में भी अपनी योग्यता प्रदर्शित करते हैं। मालवीय मास्टर सदैव वैद्यजी के कोफाजन बने रहते हैं। कॉलेज के छात्र पढ़ने की अपेक्षा लड़कियों के अश्लील फोटो और सिनेमा देखना पसंद करते हैं। अठारह वर्षीय रुप्पन बाबू मैनेजर वैद्य जी के सुपुत्र और छात्र नेता हैं।

Date

रूपन बाबू तीन वर्षों से मैट्रिक फेल कर रहे हैं। पढ़ाई लिखाई छोड़कर शेष सभी बातों में उनका नेतृत्व है। स्कूल, थाना, कोऑपरेटिव के साथ ही गाँव के गंजहों में उनका राजनीतिक दखल निर्विवाद है। कॉलेज की शिक्षा स्तर की स्थिति की बौद्धिकता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि शिक्षकों पर दफा 107 मुकदमा दायर है और वे चोर डाकुओं की कतार में खड़े कर दिये गए हैं। कॉलेज के अनियमितताओं की जाँच डिप्टी डायरेक्टर से कराने के बहाने कॉलेज मैनेजर वैद्य जी द्वारा रुक्मा और मालवीय मास्टर का त्यागपत्र जिस हथकंडे से लिया जाता है वह शिक्षा व्यवस्था के लिए घोर कलंक है। वैद्य जी के सुपुत्र रूपन और भाँजे रंगनाथ इसके विरुद्ध हैं। कुल मिलाकर यह कॉलेज शिक्षा का मंदिर नहीं अपितु राजनीतिक अखाड़ा प्रतीत होता है। यह संपूर्ण देश की बौद्धिक क्रीड़ा और शिक्षण-प्रशिक्षण व्यवस्था के यथार्थ की हास्यास्पदता भी प्रकट करता है।

रागदरबारी उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर भारतीय न्याय व्यवस्था के यथार्थ का एक जीवंत दस्तावेज है। इस उपन्यास में भारत के प्रशासन के रूप में शिवपालगंज का थाना, थानेदार, सिपाही का ही मुख्य रूप से वर्णन है। जुआरियों के साथ थानेदार और सिपाहियों की मिलीभगत है। रामाधीन भीखन खेड़ जी के घर आयी डाके की फर्जी चिट्ठी पर सिपाहियों के साथ फर्जी मुठभेड़ का दृश्य पुलिस प्रशासन की कलई पूरी तरह उतार देती है। जिला विद्यालय निरीक्षक, डिप्टी डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन, कोऑपरेटिव इंस्पेक्टर की उपस्थिति से सरकारी प्रशासन तंत्र का पूरा यथार्थ सामने आ जाता है जो कमी रह जाती है उसे कोऑपरेटिव यूनियन का सुपरवाइजर रामस्वरूप कोऑपरेटिव में गबन करके पूरा कर देता है।

~~उपन्यास के अत्यंत~~